प्रेस विज्ञप्ति

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के फिजियोलॉजी विभाग द्वारा ऑल इण्डिया क्विज कंपटीशन – 2018 का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो0 एम0एल0बी0 भट्ट, मा0 कुलपति, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कर कमलों द्वारा किया गया। उपरोक्त प्रतियोगिता की आयोजक एवं फिलियोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष, प्रो0 सुनिता तिवारी ने बताया कि प्रतियोगिता में, एम्स दिल्ली, एम्स भोपाल, एम्स ऋषिकेश, एम्स पटना, एम्स रॉयपुर, जेएमईबीएस मेडिकल कॉलेज, हिम्मतनगर, गुजरात, इदिंरा गांधी गर्वमेंट मेडिकल कॉलेज, नागपुर, महाराष्ट्रा, वीएमएमसी, नई दिल्ली, एफएमएमसी, अगरा, ईएलएमसी, लखनऊ एवं के.जी.एम.यू. लखनऊ के विद्यार्थीयों द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है। उपरोक्त कार्यक्रम का आयोजन फिजियोलॉजी सोसाइटी एवं लोकल ब्रांच एपीपीआई के संयुक्त तत्वा धान में किया जा रहा है।

प्रतियोगिता मे कुल 12 दलो द्वारा प्रतिभाग किया गया। जिसमें 8 प्रतिभागियों का दल बाहर से एवं 4 के0जी0एम0यू0 से थे। प्रत्येक दल कुल 2 सदस्य थे।

इस अवसर पर चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी ने कहा कि फिजियोलॉजी विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष इस तरह के एकेडमिक कार्यक्र किए जाते है। यह एक सराहनिय कदम है। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिभागियों के मानसिक विकास काफी अच्छा होता है।

ट्रापिकॉन – 2018

आज किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के न्यूरोलॉजी विभाग के इतिहास में एक उल्लेखीनय दिन रहा। ट्रॉपीकॉन – 2018 सम्मेलन का उद्घाटन प्रो0 एम0एल0बी0 भट्ट, मा0 कुलपति, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के करकमलो द्वारा श्री अटल बिहारी वाजपेई, साईंटिफिक कंवेंशन सेंण्टर में किया गया। यह एक राष्ट्रीय सम्मेलन है जो उष्णकटिंबधीय क्षेत्रों में संक्रमण संबधी न्यूरोलॉजीकल विकारों पर अधारित था। उपरोक्त सम्मेलन देश के विभिन्न क्षेत्रों से आएं विशेषज्ञों द्वारा अपने अनुभव साझा किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तपेदिक, कुष्ठ रोग, न्यूरोलॉलिकल जटिलताएं,जापानी एन्सेफलाइटिस, सेरेब्रल मलेरिया, न्यूरोसायसिस्टिकिकोसिस, डेंगू की न्यूरोलॉजिकल जटिलताओं, तंत्रिका तंत्र और कवक संक्रमण से जुड़े सिरदर्द जैसे तंत्रिका तंत्र से सम्बंधी विभिन्न विकारों के विषय में ज्ञान को अद्यतन करना है।

उपरोक्त सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से आएं करीब 25 वक्ताओं द्वारा अपने अनुभव, शोध एवं ज्ञान को साझा किया गया तथा 350 से अधिक प्रतिनिधियों ने द्वारा प्रतिभाग किया गया। कोलकाता से आए प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ श्यामल कुमार दास द्वारा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के न्यूरोलॉजिकल विकारों पर एक अवलोकन प्रस्तुत किया गया। एस0जी0पी0जी0आई से आए डॉ0 विमल कुमार पालीवाल, ल्यूकोनो ने सीएनएस ट्यूबरकुलोसिस की महामारी विज्ञान और नैदानिक प्रस्तुति पर चर्चा किया। पीजीआई चंडीगढ़ के डॉ0 विवके लाल ने सीएनएस ट्यूबरकुलोसिस की न्यूरो नेत्रीय जटिलताओं पर चर्चा की।

सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में डॉ0 नीरज कुमार, न्यूरोलॉजी विभाग के0जी0एम0यू0, कार्यक्रम के आयोजक सचिव द्वारा अपने स्वागत सम्बोधन में कहा गया कि उष्कटिबंधीय क्षेत्रों में संक्रमण सें सम्बंधीत न्यूरोलॉजीकल समस्याएं दश वर्षो में काफी बढ़ी गई है। कार्यक्रम में प्रो0 आर0के0 गर्ग ने बताया कि उ0प्र0 सहित देश के विभिन्न हिस्सों में ट्रापिकल डिजीज जैसे जे0ई0, डेन्गू आदि एक चैलेन्ज बना हुआ इस प्रकार के ट्रापिकल न्यूरो सम्बंधी बीमारियों के प्रबंधन के लिए जागरूकता जरूरी है। डॉ0 गर्ग ने विभिन्न प्रकार की न्यूरोलॉजी सम्बंधी बीमारियों की जटिलताओ पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में एराज मेडिकल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो0 अब्बास अलि मेहंदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ट्रॉपिकल न्यूरोलॉजिकल डिजीज के लिए के0जी0एम0यू0 को आगे बढ़ कर आना

चाहिए। इसके लिए के0जी0एम0यू0 द्वारा पाठ्यक्रम भी शुरू करना चाहिए। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की बीमारी अब अन्य क्षेत्रों में टूरिज्म आदि के माध्यम से फैल रही है इनकी रोकथाम लिए अन्य क्षेत्रों के देशों को भी आगे आना चाहिए।
कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी ने कहा कि न्यूरोलॉजी विभाग द्वारा एक प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है। विभग द्वारा विभिन्न प्रकार का पब्लिकेशन, शोध कार्य किये जा रहे है। किन्तु अब समय आ गया है कि हम पब्लिकेशन के साथ नये स्थानीय स्तर की समस्याओ पर शोध कर उसके निदान का प्रयास करें उसका पेटेंट कराए। न्यूरोलॉजी विभाग के अंदर स्पीच थेरेपी, फिजियोथेरेपी आदि की सम्पूर्ण सुविधाएं उपस्थित विभाग द्वारा सुपर स्पेशियलिटी क्लीनिक का भी संचालन किया जा रहा है।

सम्मेलन में प्रो0 राजेश कुमार वर्मा द्वारा डेन्गू के पर व्याख्यान दिया गया उन्होने बताया कि डेन्गू से कई प्रकार की न्यूरोलॉजिकल समस्याएं होती है। यह बीमारी भारत के साथ साथ आस पास के देशों में भी बढ़ रही है। भारत में 2 से 5 प्रतिशत आबादी प्रतिवर्ष डेंगू से ग्रसित होती है। यह बीमारी पूरे विश्व में धिरे–धिरे बढ़ रही है। इससे सबसे पहले ब्रेन और स्पाइनल कार्ड प्रभावित होता है। इससे मायलाईटिस एवं इंसेफलाईटीस होने का खतरा रहता है। इसके वायरस चार प्रकार के होते है। यह बीमारी हर दूसरे वर्ष महामारी की तरह बढ़ता है।

सम्मेलन में देवाशीश चौधरी, सी0बी0 पंत हास्पिटल द्वारा हेडेक डिस्आर्डर पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने कहा कि यह सबसे कॉमन माइग्रेन है। देश के करीब 25 प्रतिशत लोग इससे प्रभावित होते है। इसका इलाज प्रारंम्भिक अवस्था में कर लिया जाए तो यह ठिक हो जाता है। इनमे से 3 से 4 प्रतिशत लोगो का माइग्रेन एडवांस हो जाता है।
कार्यक्रम में डॉ0 मेशराम चंद्र, नागपुर द्वारा बताया गया कि इंसेफलाईटिस आदि बीमारियां ज्यादा तर गरीब देशों मे होती है। इन बीमारियों को स्वच्छता आदि के माध्यम से रोका जा सकता है। हम अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ रखें, मच्छड़ो को न पनपने दे।
कार्यक्रम में प्रो0 बी0के0 ओझ, विभागाध्यक्ष न्यूरो सर्जरी विभाग द्वारा न्यूरो–ट्यूबरकुलोसिस के लिए शल्य चिकित्सा पर चर्चा किया गया।

प्रेस विज्ञप्ति
यूरोलॉजी

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालयक के यूरोलॉजी विभाग में गुर्दे के ट्यूमर के रोगियों के इलाज में नई प्रगति पर एक सतत् चिकित्सा कार्यक्रम का अयोजित किया गया। कार्यक्रम प्रो0 एस0एन0 शंखवार ने बताया कि अक्सर रोगी तब आते है जब रोग पहले से ही अन्य अंगो में फैल चुका होता है। ऐसे रोगियों का परिणाम खराब है। अधिकांश अन्य कैंसर में, जब रोग उस अंग के बाहर फैल गया होता जो मैटास्टैटिक रोग कहा जाता है, तो ऐसे मे किमोथेरेपी उपचार का मुख्य आधार होता है। किन्तु गुर्दे के ट्यूमर पर परंपरागत कीमोथेरेपी का असर नही होता हैं। डॉ0 मनोज कुमार, सह–आचार्य, यूरोलॉजी विभाग, के0जी0एम0यू0 ने बताया हाल ही में, मेटास्टेटिक गुर्दे के उपचार में नए विकास हुए है। इन ट्यूमर के इलाज के बारे में दिशानिर्देश अभी भी विकसित हो रहे है, खासकर भारतीय मरीजो के लिए। गुर्दे में गांठ कई दिनों तक पड़ी रहती है जिससे अचानक से रक्त स्राव होने लगती है। पुरूषों में गुर्दे के कैंसर का मुख्य कारण स्मोकिंग है। डॉ0 पल्ल्वी आगा ने बताया कि कैंसर क्यू है इस पर हमे ध्यान देना चाहिए। आज हमारे खाने मे इतना मिलावट है जिससे हमारे रोप्ररोधक क्षममा का ह्रास हुआ है। जिससे कैंसर के सेल आसानी से बढ़ जाते है। हमे प्रोसेस्ड फुड को कम से कम खाना चाहिए और व्यायाम करना चाहिए। प्रख्यात यूरो–ऑकोलाजिस्ट डॉ0 सुधीर रावल, राजीव गांधी कैंसर संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक डॉ0 अनिल मंधीन, निदेशक, मेदांता मेडिसिटी, नई दिल्ली द्वारा इस बैठक में भाग लिया गया। कार्यक्रम में एसजीपीआइ, आरएमएलआईएमएस एवं कमांड अस्पताल के विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

प्रो0 नरसिंह वर्मा
संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, के0जी0एम0यू0

प्रो0 विभा सिंह
संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, के0जी0एम0यू0

डॉ0 सुधीर सिंह
संह–संकाय, प्रभारी
मीडिया सेल,के0जीएम0यू0